ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 13 कुल पृष्ठ-8 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 का. शु.-07

वैदिक सोमधाम योग आश्रम, ग्राम–खेड़ला, जिला–गुरुग्राम में सात दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिक समारोह सम्पन्न

दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी ने किया पुस्तकालय का उद्घाटन

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी व स्वामी अग्निवेश जी ने दिया आशीर्वाद

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी ओमवेश जी व स्वामी रामवेश जी ने दिया उद्बोधन

श्री कन्हैया लाल आर्य एवं सुभाष दुआ ने किया कुशल संयोजन

ग्राम–खेड़ला, जिला–गुरुग्राम स्थित वैदिक सोमधाम योग आश्रम में 8 से 15 अक्टूबर, 2017 तक योगनिष्ठ त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का समापन 15 अक्टूबर, रविवार को प्रातः 10 बजे हुआ। इस यज्ञ को सैकड़ों यज्ञप्रेमी महानुभावों ने निरन्तर आहुतियाँ प्रदान करके सफल बनाया तथा अनेक विद्वानों ने अपने प्रवचनों से याज्ञिकजनों को लाभान्वित किया। युवा संन्यासी स्वामी विजयवेश जी एवं तपोनिष्ठ साध्वी मुक्तानन्दा के परिश्रम एवं उत्साह के द्वारा संचालित उक्त आश्रम निरन्तर यज्ञ एवं योग साधना शिविरों के माध्यम से जनता को विशेष दिशा प्रदान कर रहा है। आश्रम में आगन्तुक महानुभावों के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था है तथा गोसंवर्द्धन केन्द्र में रखी गई गायों की सेवा का भी सुअवसर प्राप्त होता है। 15 अक्टूबर, 2017 को आश्रम का वार्षिक समारोह भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें हजारों स्त्री पुरुषों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समारोह में विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी, स्थानीय विधायक श्री तेजपाल कंवर जी, स्वामी रामवेश जी अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, स्वामी देवेश्वरानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, मा. प्रदीप कुमार, युवा गायक श्री बलराम आर्य एवं महाशय ईश्वर सिंह आर्य आदि संन्यासी एवं विद्वान कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपप्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य ने की तथा कुशल संयोजन श्री सुभाष दुआ ने किया। व्यवस्था का दायित्व श्री जतनवीर सिंह एडवोकेट, श्रीमती रेखा चौधरी, श्री बाबूलाल आर्य एवं साध्वी मुक्तानन्दा ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला।

आश्रम में नवनिर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह, स्थानीय विधायक श्री तेजपाल तंवर, स्वामी आर्यवेश जी एवं वीतराग स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर समारोह को सम्बोधित करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने मनुर्भव की व्याख्या करते हुए कहा कि एक ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार कर लेने से पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान हो सकता है। उन्होंने कहा कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक ईश्वर को मान लेगा तो वसुधैव कुटुम्बकम का विचार मूर्तरूप में बदल सकता है। उन्होंने वेद और महर्षि दयानन्द के विचारों को पूरी वैश्विक विचारधारा बताया और कहा कि ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं हो सकता है। जितने भी भेदभाव दिखाई देते हैं ये सब मनुष्यकृत हैं। अतः हमें वैदिक व्यवस्था को ही दुनिया में प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने आत्मिक उन्नति के लिए योगाभ्यास करने की प्रेरणा दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड और अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाने का आह्वान किया और कहा कि स्वयं को भगवान बताने वाले तथाकथित गुरु, बाबा या मठाधीश धर्म को बदनाम कर रहे हैं। ऐसे पाखण्डियों के ढोल की पोल समाज के सामने धीरे–धीरे खुलती जा रही है। ऐसे कई पाखण्डी इस समय जेल की यातना झेल रहे हैं। अतः अब आर्य समाज को धर्म के नाम पर चलने वाले समस्त तंत्र–मंत्र, जादू–टोना, शाकनी–डाकनी, फलित ज्योतिष, राशिफल, मूर्तिपूजा एवं विविध प्रकार के पाखण्डों के विरुद्ध जन–चेतना अभियान चलाना चाहिए।

ठा. विक्रम सिंह जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज को और अधिक सक्रिय होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के सिवाय इस देश को और कोई नहीं बचा सकता। स्वामी ओमवेश जी ने पंचमहायज्ञों की सरल व्याख्या करके श्रोताओं को यज्ञमय जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया। स्वामी रामवेश जी ने ईश्वरभक्ति के लिए योगाभ्यास एवं अष्टांग योग को अपनाना आवश्यक बताया। उन्होंने हरियाणा में शराबबन्दी लागू करने की माँग भी उठाई। आर्यनेता श्री कन्हैया लाल आर्य ने महर्षि दयानन्द को युग–प्रवर्तक बताते हुए कहा कि वर्तमान समय में महर्षि के बताये गये मार्ग पर चलकर ही हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं।

कार्यक्रम के अन्त में आश्रम के संचालक स्वामी विजयवेश जी ने सभी संन्यासियों, विद्वानों तथा आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सांस्कृतिक परिष्कार के परिप्रेक्ष्य में

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता

– श्रीमती डॉ. कमल आनन्द

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभित्ति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं।

संस्कृत और संस्कार संस्कृति के संघटक हैं। किसी भी देश या राष्ट्र की जनभावना और जीवनक्रम के सुव्यवस्थित व सुरचित स्वरूप को उस राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं। मनस्वी साहित्यकारों ने, चिन्तकों ने, राजनीतिज्ञों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा - मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता को संस्कृति कहते हैं। काका कालेलकर संस्कृति को समाज की आत्मा मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है। अतः संस्कृति उस क्रिया समूह का नाम है जिसके द्वारा विभिन्न व्यक्ति मानवजाति के सृजनात्मक जीवन में भाग लेते और उसे समृद्ध करते हैं। सच्ची संस्कृति तो मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है और यह अनुशासन भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। हमारी संस्कृति संस्कृत से ही सम्भूत और पल्लवित हो कर जी रही है। कर्मनिष्ठा, विश्वबन्धुता, समन्वय आदि जीवनदायी तत्वों की संवाहिका संस्कृत भाषा है। आज इस वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़कर सामने आ रही है क्योंकि इसी के कारण हमारी संस्कृति इतिहास के अनेक विकट झंझावातों में जूझने के बाद भी अपने स्वत्व को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रही है। संस्कृत जीवन प्रक्रिया की थाती है, गौरव है। मानवता के संरक्षण, परिवर्धन और परिष्कार के लिए जीवन की पाथेयभूता यह संस्कृत भाषा ही है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में भी प्रोफेसर कार्डोना ने संस्कृत को डंहपबंस भाषा कहा है और इसके अध्ययन को आनन्द। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में संस्कृत की उपयुक्तता वर्णित है :-

निकला जहाँ से आधुनिक यह भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्त्व है।
पाणिनि सदृश वैय्याकरण संसार भर में कौन है?
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर उत्तरोत्तर मौन है।।

विश्व संस्कृति के समग्र अध्ययन हेतु संस्कृत को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इसमें हमारे जीवन दर्शन और चिन्तन के अक्षय स्रोत सुरक्षित हैं। यह विश्व की संजीविनी शक्ति है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदार परिकल्पना इसी का अवदान है।

वैश्वीकरण ने यन्त्र, संचार तथा अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में विकास की ऊँचाइयों को छू लिया है परन्तु संस्कृति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये हैं। शान्ति स्थापना में यू. एन. ओ. के प्रयास पर्याप्त सफल रहे हैं, परन्तु हम युद्ध और आतंक को समाप्त नहीं कर पाये। संचार व्यवस्था ने विश्व को एक छोटी इकाई में परिवर्तित कर, मानव को एक दूसरे के बहुत समीप कर दिया है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष की दूरियाँ समाप्त प्राय हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक नया अर्थ प्रदान किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक परिवार है। केवल वाह्य परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं। आज की स्थिति में यह वसुधा मात्र कुटुम्ब है जहाँ सामीप्य तो है सान्निध्य नहीं। सम्मिलन तो है, संवेदन नहीं। इस वैश्वीकरण का मानव सुखी परिवार की नींव, संविभाग, सान्निध्य, कुशल माङ्गल्य आदि से अनभिज्ञ है। उसे इन सब गुणों के पुनः परिभाषण की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत की विशिष्ट भूमिका है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित उसका विश्वबन्धुत्व कहीं खो गया है। भौतिकता ने उसे ग्रस लिया है और स्वार्थ परायणता का दंश उसे डस गया है। उसे उपनिषदों के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' तथा 'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्' के ऐक्यबोध की आवश्यकता है। संस्कृत एकता और समग्रता के स्वर भरती है सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन की केन्द्रबिन्दु है। वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य गति कराने वाला ऐसा मार्ग है जहाँ न कोई भटकन है और न कोई उलझन। इसका बहुक्षेत्रीय ज्ञान मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने में सक्षम है। इसके कल्याण सम्पादक गुण 'बहुजनसुखाय' 'बहुजनहिताय' विश्वहित साधक है। ''संस्कृत साहित्य वह उच्च गिरिशृंङ्ग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है।

आधुनिक वैश्वीकरण में पनपते, कलह-क्लेश, वैमनस्य और अशान्ति से व्याकुल मानव को शुभ संकल्प और सत्कर्म की आवश्यकता है। 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु का स्वरघोष ही उसे स्वस्थ परिवेश में सांस लेने योग्य बना सकता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति विध्वंसक न हो, इसीलिए उपनिषत्स्वरलहरी 'असतो मा सद्गमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', आज भी सामाजिकों का पथ प्रशस्त करती है। आज विपरीत आचरण करने से जड़ीभूत मन में संवेदनशीलता का प्रादुर्भाव करने वाले मूलमन्त्र 'मातृदेवौ भव', 'पितृदेवोभव' धर्मं चर, सत्यं वद आदि संस्कृति के भव्यरूप को संचारित करने में सर्वथा समर्थ हैं। वस्तुतः जगत हमारी चेतना का एक प्रक्षेपण ही तो है। वैदिक सिद्धान्तों की छत्रछाया में जिस अनुपात में हम अपने को सुधारेंगे, संसार उसी अनुपात में अधिकाधिक अच्छा बनता चला जायेगा। आवश्यकता चेतना की है, आवश्यकता एकता की है, आवश्यकता समन्वय की है। हमें कुछ तो बदलना होगा, अकेली गूंज से हटकर सहगान बनाना होगा, अन्धेरे से हटकर सूरज बन चमकना होगा, अवरोधों को खण्डित कर शीतल ब्यार बन बहना होगा। दुश्चरित से बचने और सच्चरित में संलग्न होने की वैदिक प्रार्थनायें 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आ सुव' 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' आज के वैश्वीकरण की अनिवार्यता है और यह संस्कृत साहित्य में ही निहित है।

भौतिकता की होड़ में हांफता मानव आज विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई से उठ सा गया है। अनैतिक साधनों से अपने उद्देश्य की पूर्ति उसकी आदत बन गई है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदमी इन्सान बन जाये तो बहुत बड़ी बात है। एक शायर के शब्द याद आ रहे हैं :

क्या नजर लग गई जमाने को
कि अब कोई आँख नम नहीं होती।
टोकते सब हैं लड़खड़ाने को
कोई बैसाखियाँ नहीं बनता।।

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभित्ति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं। 'राहुल दुल्हनिया ले जायेगा' सीरियल की लाखों के वस्त्राभूषणों से सजी दुल्हनें तो यह भी नहीं जानती कि रामायण और महाभारत के रचनाकार कौन हैं? कोई परशुराम कहती है तो कोई हनुमान। हिन्दू विवाह संस्कार के विविध कृत्य पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी आदि के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार को वे क्या जानेंगी?

आज विवाह विधि को छोड़ रहा है और आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है। सप्तपदी के अतिशय महत्त्व का परिचायक सप्तपदीनं सख्यम् एक व्यापक लोक व्यवहार है। सख्य में सर्वदा समानता का भाव रहता है। इसमें गौरव का भी भाव रहता है श्थ्वतहमज ंदक वितहपअमश का भाव समरसता बनाये रखता है। पत्नी के प्रति इस प्रकार के उदात्तभाव संस्कृत की ही देन हैं। अधिकार और स्वतंत्रता के आधुनिक संघर्ष ने इस सख्यभाव को नष्ट प्राय सा कर दिया है। एकात्मकता के अभाव में दाम्पत्य क्षीण होकर सामाजिक समझौता मात्र रह गया है। वैदिक वैवाहिक मंत्रों से विदित होता है कि गार्हपत्य का यथावत् पालन अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक माना जाता था। यह दाम्पत्य सम्बन्ध केवल शारीरिक भोगवादी सम्बन्ध नहीं अपितु वैचारिक और हार्दिक सम्बन्ध भी है जिससे सुगठित परिवार के माध्यम से सौहार्द्रपूर्ण समाज का निर्माण होता है।

आदर्शमय जीवन था तब पति पत्नी का
धन्य जिससे वेद का युग हो गया।
गृहस्थ का वो दिव्यतम कर्त्तव्य पथ
प्रेम और विश्वास में ही खो गया।।

इसी प्रेम, विश्वास और एकता में दम्पत्ती पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से खेलते हुए अपने ही घर संसार में आनन्दित होकर सारी आयु बिता देने की कामना करते हैं। सुमङ्गली, कल्याणदायिनी वधू को आशीर्वाद दिया जाता था कि पति के घर जाकर गृहस्वामिनी, बनकर दीर्घायु भोगे। वधू पति की सहधर्मिणी और जीवन-संगिनी के पद पर सुशोभित थी। सबको अपने स्नेह से अभिसिंचित करती सभी का स्नेहभाजन बन उनके हृदयों में सम्राज्ञी बन विराजती थी। परिवार के संयुक्त जीने की पद्धति में स्नेह था, त्याग था और पवित्रता का विशुद्ध वातावरण था, जो आज कहीं देखने को नहीं मिलता। आज की अस्त-व्यस्त और मस्त जीवन पद्धति में विवाह का यह शुद्ध-बुद्ध स्वरूप कहीं खो गया है। वैश्वीकरण के इस परिवेश में क्ण्छज्ञ. क्नइसम प्दबवउम छव ज्ञपके नामक नई धारणा पनप रही है। अनेकत्व में एकत्व, समग्र जीवन का सानुपातिक विकास, व्यक्ति एवं समष्टि का सामंजस्य, अध्यात्मोन्मुखी जीवनदृष्टि आदि विशेषताएं समाज कल्याण की कसौटी रही हैं। इन उन्नायक तत्वों के अभाव में आज के समाज की नींव चरमरा गई है। आज की नारी जिस स्थिति के लिए प्रयत्नशील है उसकी परिपूर्ण कल्पना संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। वेदों की नारी सभी कार्य करने में समर्थ समाज के हर क्षेत्र में स्थान बनाने वाली एक विश्वस्त और आश्वस्त नारी है।

मातृभूमि व राष्ट्रभावना के सन्दर्भ में भी संस्कृत की उपयुक्तता प्रमाणित है। राष्ट्रैक्य और राष्ट्र सुरक्षा एक सामाजिक कर्त्तव्य हुआ करता था जहाँ वर-वधू को अपने राष्ट्र की समृद्धि करते हुए ही अपनी समृद्धि करते रहने का आशीर्वाद दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय समृद्धि का निर्मल भाव आज के वैश्वीकरण की आवश्यकता है। मन, चित्त और संकल्पों में समानता होने और तदर्थ प्रयत्न करने के उपदेश के साथ-साथ सभा-समितियों में भी सुसंवाद, परस्पर सुसंगति, समानता बनाये रखना, मिलकर चलना, मिलकर बोलना, सौमनस्य बनाये रखने का स्वर गुंजन सामाजिक कल्याण के सुर भरता है।

पहले पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग में बंटे भारत को पनुः मेघालय, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में बंटते हुए देश के लिए समग्र राष्ट्र को अपने घर के समान समझने, सुविधा और अभ्यासानुसार भाषा प्रयोग की स्वतंत्रता देने वाले उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जहाँ सब के संगठित होने तथा आपस में कोई द्वेषभाव न रखने की प्रार्थनाएँ नित्य-प्रति की सपर्या हुआ करती थीं। कामना करती हूँ कि इस वैश्वीकरण में राष्ट्रीयधर्म हमारे नेताओं को सद्विचार प्रदान करें ताकि भाषा व जातिभेद से ऊपर उठकर सर्वत्र एकात्मभाव के स्वर गूंज पायें।

राष्ट्रीय वैश्वीकरण के इस युग में आज पुनः उसी मधुर चिन्तन की, परिवारों के उल्लास व सौहार्द की आदर और आदर्श मिश्रित स्नेहिल परिवेश की आवश्यकता है।

दहेज के लोभ में वधुओं को जलाने वाले तथा कन्या-भ्रूण हत्या करने वाले परिवारों को यह बोध अनिवार्य है कि हमारी वैदिक संस्कृति में नारी पुरुष की सहयोगिनी और सहभागिनी थी। वह सम्राज्ञी बन अपने अधिकार और कर्त्तव्यों को निष्ठा से निभाती, आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक विकास द्वारा समाजसेवा में योगदान देती थी न कि कन्या-भ्रूण हत्या की पात्र बनती थी।

वैश्वीकरण के इस युग में यदि युवाओं को वैदिक जीवन पद्धति का बोध कराया जाये तो आज का सिसकता दाम्पत्य एक सुन्दर, सुवासित दाम्पत्यभाव का आनन्द ले सकेगा। कहीं कोई परिवार नहीं टूटेगा, कोई शिशु माँ-बाप से नहीं बिछुड़ेगा, कहीं कोई कन्या-भ्रूण हत्या न होगी और कहीं कोई युवती यौतुक दहन में नहीं झुलसेगी। पति-पत्नी समरस हो कर एक उज्ज्वल स्वस्थ परिवेश दे पायेंगे।

हमारा सांस्कृतिक न्यास संस्कृत भाषा में ही विन्यस्त है। हमारे समस्त

शेष पृष्ठ 6 पर

30 अक्टूबर जयन्ती पर विशेष

भारत के प्रथम क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा

– जगदीश सिंह गहलौत

भारत के होमरूल आन्दोलन की प्रसिद्ध नेत्री श्रीमती एनी बेसेन्ट के शब्दों में ''महर्षि दयानन्द सरस्वती ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीयों के लिए भारत की घोषणा की।'' स्वामी दयानन्द अपने समय के 'स्वराज्य' के एक बहुत बड़े स्वप्नद्रष्टा थे और इसके लिए उन्होंने अपने कई शिष्य भी तैयार किए। उनके शिष्यों में भारत के सर्वप्रथम क्रांतिकारी नेता पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा भी थे।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने न केवल भारत में बल्कि इग्लैण्ड में भी प्रवासी भारतीय विद्यार्थियों के हृदय में क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित की। उस समय बंगाल के युवकों में वीरेन्द्र कुमार घोष और महाराष्ट्र के सखाराम गणेश देउसकर उसी तरह के विचार फूंक रहे थे। परन्तु काल की बलिहारी है कि आज भारत की नई पीढ़ी इन शहीदों से परिचित नहीं है।

बाल्यकाल

श्याम जी का जन्म सौराष्ट्र (काठियाावाड़) के भूतपूर्व कच्छ भुज राज्य के माण्डवी नामक गांव में वि. स. १९१४ को कार्तिक वदी २ सोमवार ५ अक्टूबर १८५७ को गुजरात की भंसालि जाति में हुआ था। इनके पिता बम्बई में मेहनत मजदूरी करके अपनी जीविका चलाते थे। माता का देहांत इनके बाल्यकाल में हो गया और १० वर्ष की आयु में पिता भी छोड़कर चल बसे, तब इनकी नानी ने इन्हें शिक्षा का सहारा दिया जिससे वह कच्छ भुज राज्य के स्कूल में प्रवेश पा सके। इसी समय बम्बई के सेठ मथुरादास जीवाजी भाटिया इन्हें सुशील व मेधावी जानकर मांडवी से बम्बई ले आए और इनको भाटिया धर्मशाला में रखकर अंग्रेजी तथा संस्कृत पढ़ने का प्रबन्ध कर दिया। बड़े कुशाग्रबुद्धि होने के कारण श्याम जी अपनी कक्षा में सदा प्रथम रहा करते थे।

स्वामी जी के दर्शन

सन् १८७४ के अक्टूबर मास में श्याम जी का बम्बई की भाटिया धर्मशाला में ऋषि दयानन्द सरस्वती से साक्षात्कार हुआ। ऋषि ऐसे कुशाग्र बुद्धि, मेधावी बालक को देखकर बड़े प्रसन्न हुए और उसकी संस्कृत शिक्षा का विशेष प्रबन्ध कर दिया। श्याम जी की आरम्भिक शिक्षा बम्बई के विल्सन स्कूल तथा एलफिन्सटन हाई स्कूल में हुई। हाई स्कूल में बम्बई के सेठ छबीलदास (उर्फ लल्लू भाई द्वारका दास) के पुत्र रामदास से इनकी मित्रता हो गई। इसी मित्रता के फलस्वरूप और ऋषि दयानन्द की कृपा से श्याम जी जैसे निर्धन अनाथ व्यक्ति का विवाह सन् १८७५ में छबीलदास द्वारकादास भंसाली की पुत्री कुमारी भानुमती के साथ हो गया।

विदेश गए

श्याम जी ऋषि दयानन्द के साथ पर्याप्त समय तक रहे। उनके साथ रहने से इनके राजनीतिक विचारों को नई प्रेरणा मिली और इन्होंने देश की आवाज को विदेशों तक पहुंचाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। ऋषि की यह भी इच्छा थी कि श्याम जी यूरोप में संस्कृत शिक्षण देने जाएं। अतः सन् १८७९ के मार्च मास के अंतिम सप्ताह में श्याम जी **'इण्डिया'** जहाज से इग्लैंड के लिए रवाना हो गए। वह लन्दन १५ अप्रैल को पहुंचे और ऋषि दयानन्द के मित्र प्रो. मोनियर विलियम के प्रयत्न से उन्हें आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में २५ अप्रैल को प्रवेश मिल गया। १५ अक्टूबर को वह उसी विश्वविद्यालय में संस्कृत प्रोफेसर नियुक्त हो गए और साथ ही अंग्रेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगे। समय पर सम्मानपूर्वक उत्तीर्ण हो वह आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय ग्रेजुएट (एम. ए.) बने।

स्वदेश में

ऋषि दयानन्द की मृत्यु के कोई दो मास बाद दिसम्बर सन् १८८३ ई. में श्याम जी भारत लौटे और कुछ समय तक आर्य समाज के क्षेत्र में कार्य करते रहे। सन् १८८४ की शरद् ऋतु में वह अपनी धर्मपत्नी श्रीमती भानुमती को लेकर लन्दन चले गए और नवम्बर में इनर टेम्पल से बैरिस्टर बने। सन् १८८५ में भारत लौट कर इन्होंने बम्बई में बैरिस्टरी शुरू की। उसी वर्ष बम्बई के राय साहब गोपालराव हरि देशमुख के प्रयत्न से वह एक हजार रुपये मासिक वेतन पर रतलाम (मालवा) राज्य के दीवान (प्रधानमंत्री) नियुक्त हुए। परन्तु ३ वर्ष पश्चात् इन्होंने इस पद को त्याग दिया और बाद में वह अजमेर में वकालत करने लगे तथा वहां म्युनिसिपल कमिश्नर भी चुने गए। सन् १८८३ के आरम्भ में उदयपुर (मेवाड़) की स्टेट कौंसिल में मन्त्री हुए और सन् १८६५ ई. में १५००/– रुपये मासिक पर जूनागढ़ (काठियावाड़) राज्य के दीवान हो गए।

सन् १८६६ ई. में ब्रिटिश सरकार ने भारत को अधिकाधिक दृढ़ शिकंजों में कसने की नीति धारण की। साथ ही भारतीयों में उसकी विद्रोहात्मक प्रतिध्वनि उठी। इन्हीं दिनों २२ जून १८६७ को प्लेग कनिश्चनर मिस्टर रैण्ड की हत्या दामोदर और बालकृष्ण चाफेकर द्वारा पूना में हुई, क्योंकि वे रैण्ड के प्लेग सम्बन्धी कार्यों से बहुत असंतुष्ट थे। इसी समय **'केसरी'** के सम्पादक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को राज विद्रोही ठहरा कर सजा दी गई। श्याम जी ने स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया

और यह सोच कर कि क्रांतिकारी प्रवृत्ति प्रसार के लिए भारत की अपेक्षा विलायत अधिक उपयुक्त है, वह **जुलाई १८६७ में** बम्बई से लन्दन चले गए। कुछ समय तक वह वहां चुपचाप कार्य करते रहे। परन्तु **१८ फरवरी, १६०५** को उन्होंने लन्दन में इण्डिया होमरूल सोसाइटी नामक प्रसिद्ध संस्था स्थापित की। स्वयं उसके प्रधान बने उन्होंने सभा की मुख्य पत्रिका **'इण्डियन सोशियालोजिस्ट'** का प्रकाशन आरम्भ किया और उसका मूल्य एक आना मासिक रखा। यह पत्रिका **सन् १६२३ ई.** तक जारी रही। इसके अतिरिक्त श्याम जी ने भारतीय विद्यार्थियों के निवास की सुविधा के लिए और उनकी विचारधारा को एक इष्ट मार्ग की ओर प्रवृत्त करने के उद्देश्य से **१ जुलाई १६०५** को 'इण्डिया हाऊस' (भारतीय भवन) की स्थापना की। इस संस्था के लिए उन्होंने लन्दन के 'हाईगेट नामक क्षेत्र में एक मकान भी खरीद लिया उसमें कम से कम २५ विद्यार्थियों के निवास के लिए प्रबन्ध किया गया। मकान की पहली मन्जिल में वाचनालय व सभागृह आदि की व्यवस्था की गई और शेष दो मन्जिलों पर विद्यार्थी रहने लगे।

दिसम्बर १६०५ में श्याम जी वर्मा ने योग्य भारतीयों को विदेश भ्रमण के लिए एक हजार के ६ वजीफे देने की घोषणा की जिससे कि भारत के लेखक, सम्पादक आदि अमरीका और यूरोप का अध्ययन कर भारत में स्वतंत्र और राष्ट्रीय एकता के विचार फैलाने में समर्थ हो सकें। इस निश्चय के अनुसार श्याम जी ने **हर्बट स्पेंसर ट्रेवलिंग फेलोशिप'** और **'दयानन्द'** आदि छात्रवृत्तियां अपने निजी धन से स्थापित की और गुजरात की धर्मपुर रियासत के पेरिस प्रवासी व्यापारी व बैरिस्टर श्री सरदार सिंह राणा के धन से दो–दो हजार की तीन छात्रवृत्तियां **राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी** और तीसरी एक मुसलमान राजा **अकबर** के नाम पर रखी।

इन छात्रवृत्तियों के सहारे श्याम जी ने लन्दन में कुछ रंगरूप जमा कर लिए, उस समय इण्डिया हाऊस के निवासियों में देवतास्वरूप भाई परमानन्द, मिसेज कामा, लाला हरदयाल, धर्मवीर, सेनापति बापट, ज्ञान चन्द वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर मुख्य थे। इस प्रकार इण्डिया हाऊस क्रांतिकारियों की हलचलों का केन्द्र बन गया। ये लोग अपने विचारों का प्रचार न्यूयार्क की आयरिश रिपबलिकान संस्था के द्वारा भी करते थे।

सन् १६०६ और १६०७ में इण्डिया हाऊस राज विद्रोहियों का नामी केन्द्र बन गया और जुलाई १६०७ ई. में इसके विषय में पार्लमेंट में एक प्रश्न भी हुआ और पूछा गया कि सरकार का पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा के बारे में क्या मत है? इसके कुछ ही दिनों बाद श्याम जी लन्दन छोड़कर पेरिस चले गए और वहीं रहने लगे।

पेरिस में वह राजविद्रोह का कार्य और भी खुले ढंग से करने लगे, लेकिन अपने पत्र **'इण्डियन सोशियोजिस्ट'** को लन्दन में ही छपवाते रहे। सन् १६०८ ई. की १० मई को इण्डिया हाऊस में सन् १८५७ के गदर अर्थात् वि. स. १६१४ के **स्वतन्त्रता पत्र** भेजे गए और लगभग एक सौ भारतीय विद्यार्थी, जो कि ब्रिटिश द्वीपों के भिन्न–भिन्न भागों से आए थे उत्सव में शामिल हुए। इसके थोड़े ही दिनों बाद भारतवर्ष में **'ए शहीदो'** शीर्षक का एक पर्चा आया जो सन् १८५७ में मारे गए वीरों की याद में लिखा गया था। मतलब यह है कि इस प्रकार पहली बार भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध की स्मृति मनाई गई।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि विदेशों से सम्बन्ध रखने वाले सभी षड्यन्त्रों का इण्डिया हाऊस या भारतीय भवन ही केन्द्र था। उस समय भारत क्रांतिकारियों की विभिन्न गतिविधियों से व्याप्त हो गया था। इन सबका श्रेय श्याम जी को और उनके इण्डिया हाऊस को था।

अन्तिम दिन

सन् १६५० ई. में प्रथम महायुद्ध काल में जब फ्रांस की राजनीति ने इंग्लैण्ड का पल्ला पकड़ा तब श्याम जी को पेरिस छोड़ने के लिए बाधित होना पड़ा। वह उसी वर्ष २ जुलाई को वहां से स्विटजरलैण्ड चले गए और अपने जीवन के अन्तिम दिन उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सहित जिनेवा नगर में काटे। सन् १६२६ ई. में जब सोवियत रूप के दस वर्षीय उत्सव में शरीक होने के लिए पंडित मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू और श्री निवास आयंगर रूस गए तब लौटते समय पं. जवाहर लाल नेहरू श्याम जी से मिलने के लिए जिनेवा पहुंचे और वहां उनसे खूब बातें की। जिनेवा में ही **सन् १६३० में ३० मार्च** की सन्ध्या को **७३ वर्ष की आयु में श्याम जी की मृत्यु हो गई।** उनका अग्नि संस्कार वहीं सेण्ट जार्ज की श्मशान भूमि में किया गया।

इतिहास उन्हीं लोगों का याद रखता है जो उसको बनाने के लिए अपना सर्वस्व होम करते हैं। स्वतन्त्रता रूधिर मांगती है, रणचण्डी का मुंह लाल होता है। इस कटु सत्य के महत्व को शहीदों ने आंका। उनके खून ने खेत को सींचा जिसमें लगे फलों को आज हम स्वतन्त्र भारत में चख रहे हैं। इन शहीदों की स्मृति को जागृत रखना राष्ट्र का कर्त्तव्य है।

आर्य समाज, बेटी बचाओ अभियान एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में

रोहतक में महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह एवं पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का किया गया भव्य आयोजन

राज्यसभा सांसद शादीलाल बत्रा एवं गांधीवादी नेता डॉ. सुब्बाराव जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को अर्पित की भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वामी दयानन्द जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प लें आर्यजन

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज, बेटी बचाओ अभियान एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती के 134वें बलिदान पर्व एवं दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ एवं महर्षि दयानंद बलिदान समारोह का आयोजन मानसरोवर पार्क रोहतक में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की जबकि मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री एस एन सुब्बाराव रहे। यज्ञ के ब्रह्मा युवा वैदिक विद्वान डॉ श्यामदेव रहे। कार्यक्रम का संचालन बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्य ने किया।मुख्य वक्ता डॉ सुब्बाराव ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने देश की सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत बड़ा काम किया है। आज देश में आध्यात्म की कमी दिखाई देती है प्राचीनकाल में इसी देश से अध्यात्म की शिक्षा लेने के लिए विदेशों से लोग आते थे। आज देश के युवाओं को अध्यात्म की ओर लौटने की आवश्यकता है वही समाज में व्याप्त सभी समस्याओं का समाधान दे सकता है।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती केवल एक ऋषि ही नहीं थे अपितु वे एक प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक एवं राष्ट्र निर्माता थे। जहां उन्होंने धार्मिक, आध्यात्मिक तथा समाज सुधार के क्षेत्र में अपनी दिव्य दृष्टि का आलोक बिखेरा वहीं राष्ट्रीयता के सभी मूल तत्त्वों को संगठित तथा क्रियान्वित करने का अथक प्रयास किया। उनका मानना था कि एक धर्म, एक भाषा और एकलक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित होना कठिन है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए अन्धविश्वास, कुसंस्कारों पर कड़ा प्रहार किया। आज हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आर्य समाज आज भी पूर्ण मनोयोग से उनके बताये रास्ते पर चल रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के बलिदान दिवस को मनाने के पीछे उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लेना है। महर्षि दयानंद सरस्वती का राष्ट्र के नवनिर्माण में बहुत बड़ा योगदान है। उन्हीं की प्रेरणा से सैकड़ों क्रांतिकारी देश की आजादी के आंदोलन में अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित हुए। विलुप्तप्राय वैदिक संस्कृति को पुनर्स्थापित करने में महर्षि दयानंद का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए आज यह यज्ञ आयोजित किया गया है यज्ञ से जहां पर्यावरण शुद्ध होगा वही व्यक्ति की आंतरिक शुद्धि भी होगी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉक्टर श्यामदेव ने कहा की यज्ञ से दान, देव पूजा व संगतिकरण होता है। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि महिलाओं के उत्थान में महर्षि दयानंद सरस्वती का अतुलनीय योगदान है। उन्होंने ही सर्वप्रथम महिला शिक्षा की वकालत की थी।

आज के यज्ञ में आहुति देने वालों में मुख्य रुप से राज्यसभा सांसद श्री शादी लाल बत्रा, गुरुकुल सिंहपुरा के मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य, डॉ विवेकानंद शास्त्री, ईश्वर सिंह शास्त्री, मंजुल पालीवाल, महेंद्र शास्त्री, इंस्पेक्टर अर्जुन सिंह, नफे सिंह , डॉ परविंदर, सुनीता आर्या, सुषमा आर्या, इंदू आर्या, शशी आर्या, मोनीका, राजकुमारी आर्या, सुमन आर्या, प्रदीप कुमार अजय कुमार, दिनेश आर्य, सत्यव्रत, सुभाष गुप्ता, सत्यव्रत आचार्य, किरण, सत्यम, राजेश, विवेक भाटीया, उर्मिला, वीना, राजबाला,विनोद हुड्डा, रामकुमार आर्य, राजवीर वशिष्ठ, डॉ नारायण सिंह रामफल कुंडू, भारत स्वाभिमान के जगबीर आर्य दयावती आर्य, विद्यावती, सुरेश राठी शामिल रहे।

।।ओ३म्।।

देश की आजादी के आन्दोलन में
अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों की याद में

एक शाम शहीदों के नाम

दिनांक : 10 नवम्बर, 2017 (शुक्रवार) समय : 2 से 5 बजे तक

स्थान : पट्टी चौधरान, छपरौली, बागपत, उत्तर प्रदेश

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भजनोपदेशक
चौ. सहदेव बेधड़क जी
प्रधान भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्

मुख्य अतिथि
सरदार किरणजीत सिंह जी
(शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे)

विशेष : इस अवसर पर श्री किरणजीत सिंह जी
छपरौली नगर के शहीदों के परिजनों को सम्मानित करेंगे।

स्वागतकर्ता : श्री संजीव खोखर, चेयरमैन छपरौली

आयोजक

आर्य समाज छपरौली व समस्त नगरवासी

मीडिया सहयोगी – मिशन आर्यावर्त्त न्यूज बुलेटिन – 9354840454, 8218863689

दयानन्द पब्लिक स्कूल नूरन खेड़ा, जिला–सोनीपत में महर्षि दयानन्द बलिदान पर्व सोल्लास मनाया गया

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर दिया प्रेरणादाई उद्‌बोधन

गत् 18 अक्टूबर, 2017 को दयानन्द पब्लिक स्कूल ग्राम–नूरन खेड़ा, जिला–सोनीपत के प्रांगण में महर्षि दयानन्द बलिदान पर्व का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त स्वामी धर्मदेव जी पिल्लूखेड़ा, प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ सोनीपत, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री प्रवीण आर्य प्रधान जिला आर्य युवक परिषद् सोनीपत, प्रो. उर्मिल सांगवान चण्डीगढ़ आदि ने भी सम्मेलन में भाग लिया।

प्रातः 9 से 10 बजे तक यज्ञ किया गया जिसे श्री सुभाष सांगवान ने सम्पादित किया। यज्ञ में स्कूल के डायरेक्टर श्री चन्द्रप्रकाश मलिक एवं श्री जसवीर सिंह सांगवान सपत्नीक यजमान बने। इस पूरे आयोजन की व्यवस्था का दायित्व स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती सुनील रांणा व उनके अन्य समस्त सहयोगी अध्यापकों एवं कर्मचारियों ने बड़ी तन्मयता के साथ संभाला। मंच का संचालन प्रिं. आजाद सिंह उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ने किया। विद्यालय की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री फूल कुंवर मलिक, डायरेक्टर श्री चन्द्रप्रकाश मलिक, प्रबन्धक श्री वेद प्रकाश मलिक, उपप्रबन्धक श्री रविन्द्र मलिक आदि के अतिरिक्त जनता विद्या भवन बुटाना के पूर्व प्रधान श्री नफेसिंह सांगवान, बुटाना बारह के प्रधान श्री आजाद सिंह सांगवान, गांव गंगाना के सरपंच श्री देवेन्द्र देशवाल एवं पूर्व सरपंच श्री कृष्ण देशवाल, नूरनखेड़ा के पूर्व सरपंच श्री राजकुमार, युवा इनेलो के प्रधान श्री जोगेन्द्र मलिक, श्री कुलवीर सांगवान, श्री ओम प्रकाश सचिव बुटाना बारह, श्री बलराम आर्य गंगाना, श्री नरेन्द्र सांगवान नूरनखेड़ा आदि महानुभावों ने मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण से स्वागत किया।

प्रारम्भ में विद्यालय की छात्र–छात्राओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए व्याख्यान एवं भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। योगाचार्य स्वामी धर्मदेव जी ने यज्ञ आदि में होने वाली त्रुटियों की ओर संकेत करते हुए आग्रह किया कि हमें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने योग के नाम पर चल रही विविध प्रणालियों पर भी टिप्पणी की और कहा कि लोगों ने केवल आसनों को ही योग मान रखा है जो गलत है। आसन अष्टांग योग का केवल एक अंग है।

विद्यालय के उपप्रबन्धक श्री रविन्द्र मलिक ने स्वामी आर्यवेश जी के बारे में बताते हुए कहा कि स्वामी जी लम्बे समय से आर्य समाज के शिविरों के माध्यम से लाखों युवकों को देशभक्ति, चरित्र एवं वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा एवं आर्य समाज से परिचित करवा चुके हैं और इनका यह अभियान निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त आप अमेरिका, कीनिया, दुबई, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, स्टिजरलैंड, इटली, दक्षिण अफ्रीका, जापान, नेपाल, भूटान आदि देशों में भी आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कर चुके हैं।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने व्याख्यान में स्वामी दयानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने स्वराज्य की माँग उठाई। स्वामी जी ने ही 1857 की क्रांति असफल हो जाने के बाद

स्वतन्त्रता आन्दोलन को आगे बढ़ाया और अनेक क्रांतिवीरों को आजादी की बलिवेदी पर बलिदान देने के लिए प्रेरित किया। स्वामी जी की प्रेरणा से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार किशन सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द, केसरी सिंह बारहट, भाई बंशीलाल, महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, कलम के धनी पं. लेखराम सरीखे क्रांतिकारियों एवं देशभक्तों को तैयार किया। स्वामी दयानन्द जी पहले महापुरुष थे जिन्होंने 1875 में ही नमक कानून का विरोध किया था जबकि महात्मा गाँधी ने 55 वर्ष बाद 1930 में नमक कानून के विरुद्ध आवाज उठाई थी। स्वामी दयानन्द जी पहले नेता था जिन्होंने स्टाम्प ड्यूटी का विरोध किया, क्योंकि वे जानते थे कि स्टाम्प ड्यूटी बढ़ाने से गरीब की मुश्किलें बढ़ेंगी। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास के राजधर्म प्रकरण पर प्रकाश डालते हुए राजाओं का भी राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले लोगों को बताया। स्वामी दयानन्द जी गरीबों के हितैषी थे और वे एक विधवा महिला जो अपने दो वर्ष के बच्चे की मृत्यु के बाद वह उसे गंगा में बहाने के लिए जा रही थी उसकी व्यथा–गाथा सुनकर स्वामी जी ब्याकुल हो उठे थे। महर्षि दयानन्द जी ने जन्मना जातिप्रथा को चुनौती दी और वर्णाश्रम व्यवस्था को लागू करने पर बल दिया। वे जन्म से किसी भी प्रकार की असमानता एवं भेदभाव को वेद विरुद्ध मानते थे। स्वामी दयानन्द महान समाज सुधारक थे और उन्होंने बाल–विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा एवं कन्या भ्रूण हत्या का डटकर विरोध किया। अपने पूना प्रवचन में उन्होंने कहा था कि हम भारत के लोग कितनी ब्रह्म हत्याओं के दोषी बनना चाहते हैं बच्चियों को पेट में ही मरवाकर। स्त्री शिक्षा एवं पुनर्विवाह के वे प्रबल प्रवक्ता थे। स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी अपने क्रांतिकारी दृष्टिकोण के द्वारा ऐतिहासिक व्यवस्था दी थी। उन्होंने कहा कि यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये। इसके आगे उन्होंने कहा कि चाहे राजकुमार हो या राजकुमारी या दरिद्र की सन्तान हो सबको तुल्य वस्त्र खान–पान, आसन एवं तुल्य शिक्षा–दीक्षा मिलनी चाहिए। इससे स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती अनिवार्य शिक्षा, समान शिक्षा व निःशुल्क शिक्षा के कितने बड़े पक्षधर थे। उन्होंने गोरक्षा के लिए ऐतिहासिक अभियान प्रारम्भ किया था और वे चाहते थे कि एक करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर करवाकर महारानी विक्टोरिया को सौंपे और गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवायें। उन्होंने 'गो–करुणानिधि' पुस्तक लिखकर गाय से होने वाले लाभ उजागर किये। स्वामी दयानन्द जी के विभिन्न कार्यों एवं मन्तव्यों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने आह्‌वान किया कि वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द की विचारधारा और आर्य समाज और अधिक प्रासांगिक हो गया है और हमें जनता के बीच में जाकर इन विचारों का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

कार्यक्रम के अन्त में श्री चन्द्रप्रकाश मलिक ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

ग्राम नूरन खेड़ा राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में हैदराबाद आन्दोलन के शहीद सुनेहरा सिंह स्मारक में भी स्वामी आर्यवेश जी गये तथा युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज का चित्र स्मारक में उन्होंने अपने कर–कमलों से लगाया। उनके साथ श्री जसवीर सांगवान व श्रीमती उर्मिला सांगवान ने गाँव की ओर से सम्मानित किया।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काकड़ौली हुक्मी में बालिका मंच के अंतर्गत रॉल मॉडल कार्यक्रम का आयोजन

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काकड़ौली हुक्मी में बालिका मंच के अंतर्गत रॉल मॉडल कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा पूनम आर्या तथा संयोजक प्रवेश आर्या उपस्थित रही।

कार्यक्रम संयोजक हरपाल आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्यक्रम बालिका मंच के अंतर्गत आयोजित किया गया है। इस अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बहन पूनम आर्या ने कहा कि शिक्षा व खेल आज सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं इन दोनों में आज बेटियां सबसे आगे हैं। ओलम्पिक से लेकर बोर्ड परीक्षा परिणाम समाज को आइना दिखाने वाले रहते हैं। जिनमे बेटियों ने देश का नाम दुनिया में रोशन किया। इसलिए आज बेटियों को बेहतर सुविधाएं देनी जरूरी हैं। उनको भी लड़कों के समान अवसर मिलने चाहिए। उनको भी मान सम्मान व स्वाभिमान से जीने का अधिकार देने की आवश्यकता है। यदि हम सब मिलकर ये

कर पाए तो समाज परिवर्तन से कोई नही रोक सकता। उन्होंने ये भी कहा कि वंश चलाने के नाम पर आज कन्या भ्रूण हत्या की जा रही है लेकिन याद रखना चाहिए वंश उनके ही चलते हैं जिनके काम अच्छे होते हैं। जो जीवन की शुरुआत ही कन्या हत्या के पाप से करे ,उनका वंश कैसे चलेगा।

मुख्य वक्ता बहन प्रवेश आर्या ने अपने विचार रखते हुये छात्र व छात्राओं को कहा कि सफलता मिलना कोई चमत्कार नहीं है बल्कि कठोर मेहनत का परिणाम है। आपको जीवन में सफलता के चर्म तक पहुंचना है तो अपने जीवन में अनुशासन व दृढ़ निश्चय व सतत साधना को अपनाना होगा। आप अपनी दिनचर्या में सिर्फ सकारात्मक विचारों को शामिल रखें। अनावश्यक बातों से बचें। छात्राएं आत्ममंथन करें की महिलाओं का सम्मान हम कैसे बनाएं रख सकती हैं।

कार्यक्रम के अंत में समस्त स्टाफ द्वारा अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एयर इंडिया में अकाउंटेंट मुकेश कुमारी तथा स्टाफ सदस्य प्रवीण कुमारी, मुकेश देवी, बदामा देवी, सुखबीर सिंह, बिजेंद्र, संदीप, सुनील कुमारी, नवीता, रविन्द्र कुमार, सुरेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

आजमाएँ तो जीवन स्वर्ग बन जाए

– वैद्य राजेन्द्र साह

1. यदि आप अपने माता-पिता का आदर करेंगे तो आपके बच्चे भी आपका आदर करना सीखेंगे।

2. दूसरे मनुष्यों से जैसा व्यवहार आप अपने लिए पसन्द करते हैं वैसा ही व्यवहार यदि आप दूसरों के साथ करें तो आपका जीवन बदलकर स्वर्ग बन सकता है। सामने वाले के स्थान पर अपने को रखकर जरा सोचने की आदत डालें कि यदि ''मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?'' तो बहुत सी विकट समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा और साथ ही अनावश्यक तनाव से मुक्ति भी मिलेगी।

3. किसी को भी बिना मांगे और अनावश्यक सलाह देने और बात-बात पर टोकने की आदत त्याग दें। इस तरीके से किसी व्यक्ति, चाहे बच्चा हो या बड़ा, में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है। जीवन में सुधार लाने के लिए प्रकृति, सत्संगति, महापुरुषों का जीवन और श्रेष्ठ लेखकों की प्रेरणादायक पुस्तकें ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत हैं।

4. जैसा मधुर व्यवहार विवाह से पहले प्रेमी-प्रेमिका के मध्य देखा जाता है, वैसा ही व्यवहार प्रेमी-प्रेमिकावत् व्यवहार, एक-दूसरे को समझने की भावना और परस्पर तालमेल का विवाह के बाद जीवन में किया जाये तो पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में आनन्ददायक बन सकता है। फिर भला दाम्पत्य जीवन में कटुता और क्लेश का स्थान कहाँ?

5. 'क्या खाते हैं' इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि खाये हुए आहार को ठीक से पचाना। अतः जो आहार आप ठीक से पचा न सकें उसका सेवन न करें और जो खाद्य पदार्थ आपको अनुकूल न आता हो, उसका सेवन त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार क्या कमाते हैं? इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विवेक और बुद्धिमता से कितना खर्चते हैं।

6. दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान या कम्पेरिजन करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मजा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी 'आधी भरी, आधी खाली गिलास' के आधे खाली भाग को देखकर और अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। 'जो पास नहीं है' उसे देखकर निराश होने की बजाए 'जो पास में है' उसको देखकर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाइए। 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई-बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म-जन्मान्तर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सद्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त-व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के द्वारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण ने फल की कामना किए बिना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है :-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती है और कर्त्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

7. 'सादा जीवन, उच्च विचार' के अपनाने से जहाँ आत्मा चमकती है वहाँ फैशनपरस्ती और कुत्सित विचारों से आत्मा मलीन होती है। हमारी संस्कृति आत्मोन्मुखी होने से आत्मा प्रधान है। यहाँ व्यक्ति के चरित्र और गुणों की पूजा होती है शरीर और शरीर पर धारण किए गए वस्त्र आभूषणों या उनके नकल (फैशन) की नहीं।

आवश्यकताओं को कम करने में ही सच्चा सुख छिपा है। चाह घटाने से चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। किसी ने सच कहा है :-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, वह है शहन्शाह।।

8. सभी धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ, पूजा-पद्धतियों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ये सब केवल माध्यम अथवा मार्ग हैं- एकमात्र लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचने के लिए। जिस प्रकार अनेक नदियों और जल-धाराओं के जल का एकमात्र लक्ष्य आगे जाकर अन्त में विशाल सागर में विलीन होकर उस सागर से एकाकार हो जाना है, उसी प्रकार समस्त धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ और उनसे जुड़ी पूजा-पद्धतियों के उपासक का अन्तिम लक्ष्य भी आगे जाकर अन्त में परमात्मा की प्राप्ति ही है।

'सर्वधर्मसम्मानभाव' इतनी सी बात ठीक से समझकर जीवन में आचरण में लाई जाये तो साम्प्रदायिकता का नामोनिशान न रहेगा और इंसानियत जागेगी जिससे हमारा जीवन स्वर्ग बन जायेगा।

9. किसी भी भारतीय को किसी के आगे नतमस्तक होने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारी संस्कृति महान् है, जो कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, ज्ञानी महावीर, महात्मा बुद्ध, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द जैसे धर्मनायकों द्वारा स्थापित महान् मानवीय मूल्यों और आदर्शों पर आधारित है। यथा - 'सादा जीवन, उच्च विचार', ब्रह्मचर्य, शाकाहार, सर्वधर्मसम्मानभाव, सभी देवी-देवताओं के प्रति सम्मान, नारी के प्रति सम्मान, माता-पिता बुजुर्गों के प्रति सम्मान, सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना, क्षमा, करुणा, सत्य, अस्तेय, समन्वयवाद, कर्मवाद, संतोष, दान, शील, तप, त्याग, समर्पण, प्रेम, भाईचारा इत्यादि पर है, जो सर्वधर्म सहिष्णुता, अनेकता में एकता, सह-अस्तित्व, 'जीओ और जीने दो' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सन्देश देती है। आज विरासत में मिली मानवीय मूल्यों की ऊँचाई को छूने वाली इसी संस्कृति के कारण हमारा सिर सदैव ऊँचा रहा है और इसी से हमारा देश महान् है। भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना और उन्हें जीवन में उतारना हमारा परम धर्म है। यह लेख डॉ. अजीत मेहता जी द्वारा लिखित ''स्वदेशी चिकित्सा सार'' पर आधारित है।

- ग्राम. पो.-सरैया बाजार, वाया-पारू, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)-843112

पृष्ठ–2 का शेष

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता

धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न हैं। अतः संस्कृत से मन, वाणी और क्रिया को सुसंस्कृत करना होगा। आज वैश्वीकरण के युग में सभी अनुष्ठान औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इनके प्रति शिथिलता और उदासीनता आज का फैशन है। बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज का मानव इनकी वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ है। इस स्थिति में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़ जाती है। हमारे विविध याज्ञिक आग्नेय अनुष्ठान केवल शरीर और मन को ही शुद्ध नहीं करते वे पर्यावरणीय शुद्धि में भी सहायक हैं। इन कृत्यों में किये जाने वाले मन्त्रोच्चारण से प्रसृत स्वर लहरियों से 'Ultra Sonic Waves Treatment' के समान रोगाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है। 'सह नाववतु सह नो भुनक्तु सह वीर्य करवावहै' का सहभागित्व ही आज के वैश्वीकरण की पुकार है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में संस्कृति के नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा राष्ट्रीय प्रसंग में संस्कृत की उपयुक्तता पूरे विश्व में है। विश्वशान्ति के लिये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', मानव व प्रकृति के सुन्दर, स्वस्थ पर्यावरण के लिए 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः', राष्ट्रैक्य के लिए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी' आदि निर्देश महत्त्वपूर्ण हैं। संसदभवन में 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', डाकतार वाहनों पर 'अहर्निशं सेवामहे' जीवन बीमा निगम में 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' शिक्षा संस्थानों में विद्ययाऽमृतमश्नुते ''निष्ठा धृतिः सत्यम् तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदि सारगर्भित वाक्य आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की सर्वप्रचलित उपयुक्तता को ही प्रमाणित करते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत एकविषयात्मिक नहीं है। यह विविध विषयों की शृंखला है। यदि आज के पाठ्यक्रम में संस्कृत निबद्ध तत्-तत् अंश विभिन्न विषयों में निर्धारित कर दिये जायें तो भारत का ही नहीं, विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने अतीत को अधिक समझ पायेगा, वर्तमान में विशेष सन्तुलित व्यवहार कर पायेगा और अपने भविष्य के प्रति उल्लसित होकर उचित आचरण कर पायेगा। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह नितान्त अनिवार्य है कि संस्कृत की विषय श्रृंखला विविध विषयों से सुसम्बद्ध हो पाये। राजनीति में कौटिल्यशास्त्र की, कानून में मनुस्मृति की, आयुर्वेद में चरक व सुश्रुत संहिता की अनिवार्यता विषयों को तत्वतः जानने में सहायक भी होगी और उपयोगी भी। वाणिज्य व व्यावसायिक प्रबन्धन भी संस्कृत निष्ठा होने पर विशेष सुभग बन सकता है। चेतना, नैतिक मूल्याङ्कन, सदसंकल्प व परिश्रम आज के प्रबन्धन की कड़ियाँ हैं।

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मदर्शन (Introspection) आत्मश्रवण (अपने दोषों को सुनने की सामर्थ्य) और आत्मनिदिध्यासन (Self Analysis) वैश्वीकरण के इस युग में मानव को सद्-दृष्टि देने में सक्षम हैं। आज इसी आत्मदर्शन, आत्मश्रवण और आत्मनिदिध्यासन की आवश्यकता है।

आज की मानवता अलगाव और अकेलेपन की मर्मान्तक पीड़ा से सन्त्रस्त है। संस्कार प्रधान संस्कृति आज की अनिवार्यता है। विनय, आदर, वृद्धसेवा आज की पुकार है। सुसंस्कृत व्यवहार और आचरण जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। यह तथ्य यदि आज की पीढ़ी समझ पाये तो Old Age Homes की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आधुनिक सभ्यता से पीड़ित और उपेक्षित वृद्ध भी अपने-अपने परिवारों में सुखद जीवन बिता सकेंगे और 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम् शरदः शतम्' को सार्थक कर पायेंगे।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत की उपयुक्तता इस तथ्य में भी निहित है कि संस्कृतनिष्ठ व्यक्ति किसी भी विकट स्थिति से सहजता से उभर सकता है। गीता की स्थितप्रज्ञता, उपनिषदों का आध्यात्मिक ज्ञान, वेदों का शुभसंकल्प उसे आश्वस्त कर उसकी राहों के दीपस्तम्भ बन उपस्थित होते हैं। सत्यं शिवं सुन्दरं की अजस्र धारा निरन्तर सिंचित करती उसे पल्लवित और विकसित करती हैं।

आशा करती हूँ कि वैश्वीकरण के इस दौर में संस्कृति के सकारात्मक चिन्तन की दीपशिखा निरन्तर जगमगाती रहे। दीप से दीप प्रज्ज्वलित होता रहे, लोक कल्याण की सुरभि चहुँदिक् महकती रहे। मेरा मानना है कि संस्कृत वह चिराग है जो हकीकत है - सच्चाई है। वह रोशनी है जो हमारी मायूसियों से मद्धम हुए चिरागों को रोशन करती है। वह जीवन तत्व है जो हमें भाव, विचार और अभिव्यक्ति का उचित अनुपात सिखाती है। जियो और जीने दो का पाठ पढ़ाती है हमें इस योग्य बना देती है कि हम किसी के फटे लिवास को टांक सकें, किसी के मन की आबरू बन सकें। संस्कृत वस्तुतः अमृत की बूँदें हैं। आब-ए-हयात के कुछ कतरे हैं। संस्कृत वह शाश्वत चिन्तन है जो अहसास कराता है हम कौन थे, हम क्या हैं और क्या होंगे अभी। आज के वैश्वीकरण परिवेश में संस्कृत मानो मानव को कह रही है :-

खुशबू हूँ मैं, फूल नहीं हूँ जो मुरझा जाऊँगी,
ममता का आंचल बन के तुम को लोरी सुनाऊँगी
मेरे गीत सहारा देंगे मीत बन कर सहलाऊँगी
अनदेखा तारा बन करके राह मैं तुम्हें दिखाऊँगी।

- आदरी प्रोफेसर, विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान, होश्यारपुर

अमृतसर, पंजाब में महर्षि बलिदान दिवस मनाया गया आज पूरा विश्व महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जाने–अनजाने में मान रहा है

– ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज के संस्थापक व महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के 134वें बलिदान दिवस पर महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली में आयोजित संकल्प यज्ञ व शुभ दीपावली पर्व बड़े ही धूमधाम व श्रद्धा से मनाया गया।

समारोह का शुभारम्भ आचार्य दयानन्द शास्त्री ने बृहद गायत्री यज्ञ के साथ किया जिसमें यजमान पद को सुशोभित श्री कर्ण पसाहन, नम्रता सुबाहु–ऋचा, अमनप्रीत–मनीषा, सुधीर गुप्ता–धवी गुप्ता ने किया। तत्पश्चात् श्री नरेन्द्र आर्य, सुलोचना आर्या, राकेश आर्या, ऋचा, कमलेश रानी, सुनीता पसाहन ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित भजनों को गाकर उपस्थित जन समूह को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि महंत रमेशानन्द जी, श्री विजय सर्राफ, श्रीमती स्वराज ग्रोवर। विशेष अतिथि डॉ. नवीन आर्य, डॉ. अंजू आर्या, जुगल महाजन, जवाहर लाल मेहरा, इन्द्रपाल आर्य आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार ने कहा कि आज पूरे विश्व में महर्षि दयानन्द जी की दुंदुंभी बज रही है। दीपावली की अंधेरी रात को, अज्ञानता, अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, छुआछूत जैसे महा विनाश को ऋषि दयानन्द जी ने ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित कर दिया और इस देश को महाविनाश से बचा लिया। आज हजारों ऋषि भक्त, ऋषि के विचारों को विश्व में फैलाकर ज्ञान की रोशनी देते हुए सूर्य सा चमक रहे हैं। आज हमें उनके निर्वाण दिवस पर पुनः संकल्पित होते हुए मानवता व परोपकार के कार्यों को बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए।

इनके अतिरिक्त श्रीमती स्वराज ग्रोवर, डॉ. नवीन आर्य, श्री जवाहर लाल मेहरा ने स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि देकर सभी को दीपावली की शुभकामनाएं अर्पित की। इस अवसर पर विजय कुमार आर्य, राज कुमार, अशोक वर्मा, सुनील पसाहन, नीलम, शशि, मीना, सुनीता वैद, नरेश पसाहन, विजय अरोड़ा, नम्रता, कोमल, सुबहु, अनिकेत, गुरशरण सिंह, चमन लाल आदि उपस्थित थे।

– दयानन्द शास्त्री

अन्धकारमय अवस्था से परमज्योति–प्राप्ति

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

–ऋ० १/५०/१०/ ; अथर्व० ७/५/५३

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः।। देवता–सूर्यः।। छन्दः–निचृदनुष्टुप्।।

विनय–हमें ऊपर–ऊपर, अधिक–अधिक प्रकाश में उठना है। इस अन्धकारमय अवस्था से निकल परमज्योति तक पहुँचना है। हमें अपनी यह वर्त्तमान अवस्था अन्धकारमय इसलिए प्रतीत नही होती चूँकि हमें उसके अतिरिक्त अभी और किसी प्रकाश का पता ही नहीं हैं। यदि हमें इससे अगला ही प्रकश दीखने लगे तो कम–से–कम इस वर्त्तमान अँधेरी दशा से बाहर निकलने को हमारा जी अवश्य छटपटाने लगे। हाँ, उस अन्तिम ज्योति तक बेशक हम धीरे–धीरे ही पहुँचेंगे। एकदम उस परमज्योति को तो हमारी आँख सह नहीं सकेंगी, अभी उस चकाचौंध करने वाले महाप्रकाश के दृष्टिगोचर हो जाने पर तो शायद हमारी अनभ्यस्त निर्बल दृष्टि अन्धी हो जाए या हम पागल जाएँ, अतः हमें क्रमशः एक के बाद एक उच्चतर प्रकाश को देखते हुए ऊपर जाना होगा। हम इस तामसिक दशा को छोड़ राजसिक अवस्थाओं से गुजरते हुए सत्त्व के प्रकाश में पहुँचेंगे। इस जड़वाद (नास्तिकता) और भोगवाद के अन्धकार से उठ देववाद और यज्ञवाद के विविध प्रकाशों को देखते हुए उस सर्वोच्च प्रकाश में जा पहुँचेंगे जहाँ एकेश्वरवाद और सर्वोदयवाद का अखण्ड राजय है। जड़ता, स्थूलता के पार्थिव अन्धकार से उठकर सूर्य–किरणों से प्रकाशित सूक्ष्मतर विस्तृत अन्तरिक्ष की सैर करते हुए उस सूर्य ही को पा लेंगे जिसकी कि ज्योतिर्मय किरणों से अन्य सब लोक प्रकाश पा रहे हैं। हे प्रभो! हम पर ऐसी कृपा करो कि हम इस अन्धकारमय प्रकृतिग्रस्त अवस्था से उठकर नाना देवों को दिखलानेवाली अपनी आत्मिक ज्योति को विविध प्रकार से देखते हुए अन्त में तुम्हारी उस परमात्म–ज्योति को पा लेवें, जिसमें कि तुम सब देवों के देव और सब ब्रह्माण्ड के प्रेरक महान् सूर्य होकर अपने अनन्त अपार अखण्ड प्रकाश में सदैव जगमगा रहे हो, सदैव देदीप्यमान हो रहे हो।

शब्दार्थ–**वयम्**=हम **तमसः परि**=अन्धकार से ऊपर **उत्**=ऊँचे उठकर **उत्तरं ज्योतिः**=अधिक उच्च, उच्चतर, प्रकाश को **पश्यन्तः**=देखते हुए उस **देवत्रा देवम्**=सब देवों के देव, सब प्रकाशों के प्रकाशक **सूर्य**=सर्वप्रेरक, महासूर्य को **उत्तमं ज्योतिः**=उस सबसे उत्तम, उच्चतम ज्योति को **अगन्म**=प्राप्त करें।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

मानव सेवा प्रतिष्ठान

60बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-110029, मोबाईल : 9810283782, 9968357535

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मान्यवर महोदय, मानव सेवा प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष निर्धन, आश्रयविहीन एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर उत्साहवर्धन करता है तथा समाज सेवा में समर्पित विद्वान्-विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करता है। आप सभी कार्यक्रमानुसार सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम

दिनांक : 29 अक्टूबर, 2017, समय : प्रातः 8 से दोपहर 2 बजे तक।
स्थान : गुरुकुल भैयापुर, लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)

हवन	:	प्रातः 8.00 बजे
यज्ञब्रह्मा	:	आचार्या सुकामा जी (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा)
यजमान	:	डॉ० विवेकानन्द जी शास्त्री, डॉ० श्यामदेव जी, प्राचार्य यशवीर शास्त्री तथा सत्यव्रत शास्त्री सपरिवार
अध्यक्षता	:	आचार्य हरिदत्त जी उपाध्याय (गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत)
उद्घाटन	:	स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
मुख्य अतिथि	:	श्री रामस्वरूप आर्य (प्रधान, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)
विशिष्ट अतिथि	:	श्री जगदीश तिवारी (सूत्रमेर, हॉलैण्ड), चौधरी देवदत्त डबास (प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू.एस.ए.), श्रीमती सुमेधा डबास (सदस्या, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी) श्री आजाद सिंह लाकड़ा (प्रधान, जाट मित्र मण्डल, दिल्ली), श्री श्रीओम दलाल (सदस्य, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी), श्रीमती कीर्ति अवतार (मानव सेवा प्रतिष्ठान, हॉलैण्ड)

वक्तागण

डॉ० सुरेन्द्र जी (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक), ब्र० दीक्षेन्द्र आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा), प्रवीणकुमार आर्य (चेयरमैन फोरसाइट, दिल्ली), श्री जसवीर सिंह मलिक (सम्पादक जाटरत्न), मा० रामकुमार गहलावत (साँपला), श्री राजवीर राज्याण (सम्पादक, जाट महान)।

अभिनन्दन

1. नैष्ठिक ब्रह्मचारी कुञ्जदेव जी, प्रधानाध्यापक, गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा को स्व० पं० ऋषि बलदेव तिवारी, हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से। 2. आचार्या सविता जी, पाणिनि प्रभात कन्या महाविद्यालय, हैदराबाद को स्व० श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर (राज०) स्मृति सम्मान से। 3. आचार्य ओमप्रकाश जी, गुरुकुल माऊण्ट आबू, राजस्थान को स्व० श्री शुभराम सहरावत, पालम, दिल्ली स्मृति सम्मान से। 4. ब्रह्मचारिणी सविता आर्या, प्राध्यापिका, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा को श्रीमती वेदकौर आर्या, याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान से। 5. पं० बृजपाल शर्मा कर्मठ, कम्हेड़ा, तुगलकपुर, मुजफरनगर (उ०प्र०) को चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य, याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान से। 6. श्री सहदेव समर्पित, सम्पादक शान्तिधर्मा, जीन्द, हरियाणा को स्व० श्री रामपत आर्य, इस्माईला, रोहतक, हरियाणा स्मृति सम्मान से। 7. डॉ० यज्ञवीर जी, गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड) को स्व० मास्टर रतनसिंह जी डबास, सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से। 8. प्राध्यापिका कल्पना आर्या, कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा को श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी, हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से। 9. आचार्य भद्रकाम वर्णी, आर्यसमाज मिंटो रोड, दिल्ली को श्री विशन नारायण मुखी, कीर्ति नगर, दिल्ली स्मृति सम्मान से। 10. ब्रह्मचारी यशवीर आर्य, प्रबन्धक, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक, हरियाणा को स्व० श्री देवपाल शास्त्री, मकड़ौली कलां, रोहतक, हरियाणा स्मृति सम्मान से। 11. बहन पूनम आर्या व प्रवेश आर्या, बेटी बचाओ अभियान, स्वामी इनन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, हरियाणा को स्व० श्रीमती बरजी देवी, खानपुर, खोरड़ा, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

छात्रवृत्ति वितरण

इस शुभ अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के अनेक छात्र-छात्राओं को लाखों रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

निवेदक
रामपाल शास्त्री

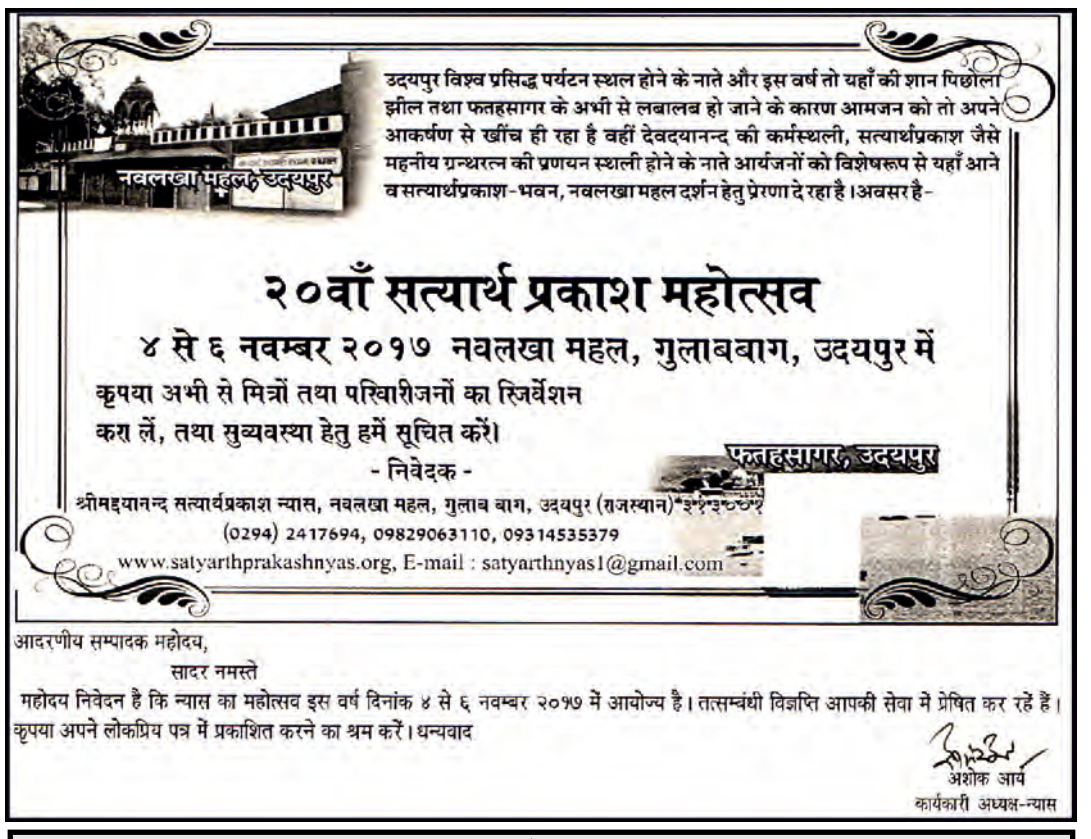

उदयपुर विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल होने के नाते और इस वर्ष तो यहाँ की शान पिछोला झील तथा फतहसागर के अभी से लबालब हो जाने के कारण आमजन को तो अपने आकर्षण से खींच ही रहा है वहीं देवदयानन्द की कर्मस्थली, सत्यार्थप्रकाश जैसे महनीय ग्रन्थरत्न की प्रणयन स्थली होने के नाते आर्यजनों को विशेषरूप से यहाँ आने व सत्यार्थप्रकाश-भवन, नवलखा महल दर्शन हेतु प्रेरणा दे रहा है। अवसर है-

२०वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

४ से ६ नवम्बर २०१७ नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर में

कृपया अभी से मित्रों तथा परिवारीजनों का रजिर्वेशन करा लें, तथा सुव्यवस्था हेतु हमें सूचित करें।

- निवेदक -

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान)
(0294) 2417694, 09829063110, 09314535379
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

आदरणीय सम्पादक महोदय,
सादर नमस्ते

महोदय निवेदन है कि न्यास का महोत्सव इस वर्ष दिनांक ४ से ६ नवम्बर २०१७ में आयोज्य है। तत्सम्बंधी विज्ञप्ति आपकी सेवा में प्रेषित कर रहे हैं। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र में प्रकाशित करने का श्रम करें। धन्यवाद

अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 27–28 अक्टूबर, 2017
प्रकाशन की तिथि : 26 अक्टूबर, 2017 वैदिक सार्वदेशिक
26 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

हरियाणा सरकार द्वारा पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' जी को
हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1857 के स्वतन्त्रता सेनानी की उपाधि से अलंकृत किया गया

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य जगत् के वैदिक विद्वान वेदोपदेशक पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' को सन् 1857 के आर्य समाज के द्वारा संचालित "हिन्दी रक्षा आन्दोलन" के अन्तर्गत कारागार भोगने तथा मातृभाषा हिन्दी की रक्षा के लिए अनेक यातनाएँ सहन करने के कारण हरियाणा सरकार द्वारा उन्हें स्वतंत्रता सेनानी घोषित करके 15 अगस्त, 2017 को पानीपत के आर्य पी.जी. कॉलेज के विशाल प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस के महान अवसर पर "स्वतंत्रता सेनानी" की गौरवपूर्ण उपाधि से मान्य श्री कर्णदेव कम्बोज, खाद्यमंत्री हरियाणा सरकार द्वारा अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

पं. जगदीश चन्द्र वसु का जन्म पं. ब्रह्मानन्द शर्मा तथा पूज्या माता चन्दा देवी शर्मा के घर 8 अगस्त, 1938 में ग्राम कुरली, जिला बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके जीवन में बचपन से ही अपने देश के प्रति आस्था तथा भक्ति थी। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार, आर्य समाज तथा महर्षि देव दयानन्द के सिद्धान्तों, मान्यताओं के प्रचार–प्रसार में समर्पित कर दिया। आप एक उच्चकोटि के विद्वान्, उपदेशक, वैदिक प्रवक्ता तथा लेखक हैं। आप सन् 1959 से निरन्तर प्रचार तथा लेखन कार्य में रत हैं।

आप सार्वदेशिक आर्य वीरदल, नई दिल्ली के प्रधान शिक्षक रहे। आपने हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि में असंख्य युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा। आपने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन में पूर्ण सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, पंजाब एवं महाराष्ट्र में महोपदेशक के पद पर रहते हुए प्रचार कार्य किया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं उपसभा हरियाणा में सहायक तथा वेद प्रचार अधिष्ठाता के पद पर 25 वर्ष तक प्रचार कार्य किया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1957 में एवं सन् 1967 में गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर तीन बार कारावास की सज़ा काटी और यातनाएँ सही। परन्तु मातृभाषा हिन्दी तथा गौमाता का अपमान नहीं होने दिया।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में हिन्दी भाषा की रक्षा हेतु आपको हरियाणा सरकार की ओर से लघु सचिवालय में 29 सितम्बर, 2017 शुक्रवार को राज्य शिक्षामंत्री माननीय श्री अनिल विज जी ने स्मृति चिन्ह, शॉल एवं पुस्तिका आदि भेंटकर सम्मानित किया। पत्रकार बन्धुओं ने अपने समाचार पत्रों में इस समाचार को स्थान देकर न केवल आपका ही सम्मान किया है अपितु भारत के उन लाखों, करोड़ों राष्ट्रभक्तों तथा शहीदों का भी सम्मान किया जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' जी ने लगभग 30 पुस्तकों का लेखन करके वैदिक साहित्य की समाज सुधारक परम्परा का निर्वाह करके आर्यत्व का परिचय दिया है। आपकी शिक्षा–दीक्षा निम्नलिखित स्थानों पर हुई :–

(1) चण्डी संस्कृत महाविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश। (2) सर्वदानन्द साधु आश्रम, संस्कृत महाविद्यालय, हरदुआगंज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश। (3) श्री दयानन्द उपदेश महाविद्यालय, यमुनानगर, हरियाणा। (4) दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा के आप योग्य स्नातक हैं।

मान्य श्री 'वसु' जी हिन्दी आन्दोलन के साथ–साथ समाज के सगज प्रहरी, प्रबुद्ध विद्वान् हैं और समाज में दायरा विकसित किये हुए जाना–माना चेहरा और जनसंघ से जुड़े पुराने व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मान्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं मुम्बई महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस कमिश्नर तथा वर्तमान में केन्द्रीय राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी आर्य द्वारा तथा अन्यत्र 27 बार सम्मानित किया जा चुका है। आपने अपने अथक परिश्रम से पानीपत में 7 फरवरी, 1987 को आर्य समाज देशराज कालोनी की स्थापना की जहाँ आपके नेतृत्व में 30 वर्षों से वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह विशेष पर्व आदि उत्साह पूर्वक मनाये जाते हैं।

– आचार्य राजकुमार शर्मा, वैदिक प्रवक्ता,
पानीपत, हरियाणा, मो.:–9416333226

गुरुकुल लाढोत जिला रोहतक का 26वां वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न
सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया सार्वजनिक अभिनंदन
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संस्कृति को बचाने में अहम भूमिका निभा रही हैं
– स्वामी आर्यवेश

दिनांक 15.10.2017 को गुरुकुल भैयापुर लाढोत का वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान परमपूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज रहे। इस अवसर पर स्वामी जी का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया। स्वामी जी को सम्मान पत्र व शॉल भेंट किया गया। स्वामी जी महाराज ने अपने वक्तव्य में पाखंड के खिलाफ ओजस्वी भाषण दिया। उन्होंने पाखंड को मिटाने में अपने जीवन की आहुति देने वाले रामचन्द्र छत्रपति व ब्रह्मचारी उदयवीर को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी ने कहा कि आज संस्कृति को बचाने में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अहम योगदान है। इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा गुरुकुलों को बढ़ावा देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि गुरुकुल में आचार्य के सान्निध्य में चौबीस घण्टे रहने वाले ब्रह्मचारी पर गुरुजनों की निरन्तर नजर रहती है। नियमित दिनचर्या, अनुशासन और सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षा प्राप्त करके जब विद्यार्थी बाहर निकलता है तो वह अपने चारित्रिक गुणों और परिष्कृत बुद्धि द्वारा अपने परिवार, समाज तथा देश का नाम रोशन करता है। अतः आवश्यकता है कि हम सब अपने बच्चों को गुरुकुलों में भेजें तथा गुरुकुलों को हर सम्भव सहायता प्रदान करें जिससे गुरुकुल पूर्ण रूपेण निश्चिन्त होकर अच्छे मानवों का निर्माण कर सकें।

कार्यक्रम में मुख्यअतिथि रोहतक के सांसद श्री दीपेंद्र जी हुड्डा रहे ।सांसद जी ने कार्यक्रम में आये सभी आर्यजनों को दीपावली की शुभकामनाएं दी और साथ ही संस्था में 5 लाख रुपये के सहयोग की घोषणा की व 10वीं कक्षा के अच्छे परिणाम की बधाई दी। जींद से पधारे स्वामी रामवेश जी ने सभी लोगों को नशाखोरी के विरुद्ध आंदोलन के लिए प्रेरित किया।

उनके बाद आर्य समाज नागौरी गेट हिसार से आये प्रधान चौधरी हरिसिंह सैनी जी ने 10 सी जी पी ए में आये छात्रों को इनाम वितरित किये तथा अपने वक्तव्य में आर्य समाज को पुनः संगठित होकर समाज को नई दिशा देने का आहावान किया ।विद्यार्थियों ने आये हुए अतिथियों को भजनों और भाषणों के माध्यम से आनंदित किया। बहन कल्याणी आर्या भजनोपदेशिका ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के बारे में बताते हुए गुरुकुलों पर विशेष प्रकाश डाला।

इनके अलावा कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र जी ,बहन दयावती,आचार्य आजाद जी,गुरुकुल सिंहपुरा के मंत्री श्री वेदप्रकाश जी, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश, राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम जी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान रामपाल शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री,राजबीर वशिष्ठ, राजेन्द्र आर्य, आदि उपस्थित रहे। प्राचार्य जयवीर आर्य ने विद्यार्थियों के पढ़ाई व खेलों में अच्छे प्रदर्शन की सराहना की तथा मंच का संचालन अच्छे ढंग से किया। जैसे ही कार्यक्रम का समापन हुआ तो विद्यर्थियों ने व्यायाम प्रदर्शन किया जिसमे लकड़ मलखम्भ रस्सा मलखम्भ तथा जिम्नास्टिक में आग के गोले से निकलकर मनमोहक प्रदर्शन किया।

अंत मे गुरुकुल के संचालक व संस्थापक श्री आचार्य हरिदत्त जी ने अपने उद्बोधन से कार्यक्रम के सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। समस्त व्यवस्था यशवीर आर्य ने संभाली।

स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करते चौधरी हरि सिंह सैनी जी

चौधरी हरिसिंह सैनी जी उद्बोधन देते हुए

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।